AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

गिरिराज किशोर के उपन्यासों में रजनीतिक चेतना

प्रतिभा ठाकरे
सहायक प्रोफेसर रूंगटा कॉलेज दुर्ग

DECLARATION:: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THIS JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN PREPARED PAPER.. I HAVE CHECKED MY PAPER THROUGH MY GUIDE/SUPERVISOR/EXPERT AND IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ PLAGIARISM/ OTHER REAL AUTHOR ARISE, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. . IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL.

सार

वर्तमान जनता न युग में उपन्यास को साहित्य विधा में शीर्ष स्थान प्राप्त हुआ है । आधुनिक जीवन की कामुखी विविता रूजटिलता और विशदता का समावेश उसके जनतात्रिक रूप का द्योतक है । उसने संसार के समस्त क्रिया कलाप और मनुष्य की सामाजिक राजनीतिक ,आर्थिक और नैतिक समस्याओं का व्यापक एवं सशक्त प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है ।प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में सत्ता और राजनीति , शासन तन्त्र एवं व्यक्ति , नवीन सामाजिक राजनीतिक मूल्यव्यवस्था राजनीति शासन गांधीवादी सिदान्त आदि विभिन्न राजीतिक प्रतिमानों को गिरिराज किशोर के जोपन्यासिक साहित्य में स्पष्ट करने का प्रयास कियाहै ।गिरिराज किशोर का जुगलबन्दी 19778 उपन्यास द्वितीय विश्व पुट एवं भारत स्वतन्त्र होने तक के वातावरण को प्रस्तुत करता है ।गिरिराज किशोर के पूर्ववर्ती रानीतिक उपन्यासों में प्रेमचन्द पशपाल , रांगेय राघव तक अंचल का नाम वाता है जिन्होंने स्वतन्त्रता पूर्व राजनीतिक उपन्यासों का प्रणयन करके उनमें तात्कालिक समस्याओं को उदधारित किया।

मुख्य शब्दः *गिरिराज किशोर, उपन्यासों*

प्रस्तावना

वर्तमान जनता न युग में उपन्यास को साहित्य विधा में शीर्ष स्थान प्राप्त हुआ है । आधुनिक जीवन की कामुखी विविता रूजटिलता और विशदता का समावेश उसके जनतात्रिक रूप का द्योतक है।उसने संसार के समस्त क्रिया कलाप और मनुष्य की सामाजिक राजनीतिक ,आर्थिक और नैतिक समस्याओं का व्यापक एवं सशक्त प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। मानव जीवन की विविध चित्रों को चित्रित करने का जितना अवकाश उपन्यासो में मिलता है ,उतना अन्य साहित्यिक उपकरणों में नहीं । दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि उपन्यास मानव सम्बन्धों

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject:Humanities

और परिस्थितियों का साधात्क्कि स्वरूप है,जो व्यक्ति का पुनरन्वेषण कर समाज में उसकी सक्ति स्थिति का न करता है । इसीलिए उपन्यास को मानव जीवन की व्याख्या कहा गया है।

साहित्यकारों ने उपन्यास को सामाजिक व्यक्तिवादी, मनो वैज्ञानिक , ऐतिहासिक , आचलिक , समाजवादी पा राजनीतिक आदि वर्गों में रखा है । राजीतिक उपन्यास में अपने अति व्यापक रूप में पुगचेतना ,सम सामायिक राजनीतिक घटनाओं , राजनीतिक चरित्र , राजनीतिक विचार पाराओं और मनुष्य के संघर्षशील व्यक्तित्व का वर्णन निहित रहता है। रानीतिक उपन्यास अपने केलवर में राजनीति , मानव , समाज , राषट् और बिव के क्षितिजों को एक विशिष्ट दृष्टिकोण से देखने का प्रयास करता है । वह सम–सामयिक राजनीति के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय जागरण का सहयोगी मकर राष्ट्रीय राजनीतिक समस्याओ का ऐतिहासिक , आर्थिक पृष्ठभूमि पर विश्लेषण कर , निर्देश दे , जनमत को प्रबुद्ध करता है। इसमें सन्देह नहीं कि राजनीतिक उपन्यासों की हिन्दी में एक सुनिरिक्त परम्परा है। यह एक संयोग ही कहा जाएगा कि भारतीय राजनीतिक और हिन्दी उपन्यास साहित्य का विकास समानान्तर एवं समाज गति से हुआ है । प्रजा तात्रिक शासन व्यवस्था से मानव जीवन को एक नई सामाजिक मान्यता दी । साहित्य में भी इसका अपेक्षित प्रभाव पड़ा जिसके फलस्वरूप हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासों का शुभारम्भ हुआ । सन् 1921 में गांधी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन ने एक नया रूप ले लिया और उसके एक दो वर्ष के बाद ही प्रेमचन्द ने श्प्रेमाश्रम लिएर राजनीतिक उपन्यासों की शुरुआत की। हिन्दी का प्रथम भारतीय राजनीतिक उपन्यास कार भी उन्हें माना जाने लगा । जिन्होंने भारतीय राष्ट्रीय जीवन के नये क्षितिजों के उन्मेष तथा समस्याओं की अपने उपन्यासों में स्थान दिया। गांधीवाद के सिद्धान्तों तथा गांधी जी के नेतृत्व में हुए राष्ट्रीय आंदोलनों का व्यापक चित्रण ही प्रेमचन्द के उपन्यासों की सबसे बड़ी सफलता है। इसके बाद उपन्यासों में राजनीति की एक सुनिश्चित वारा चल्न पड़ी।

राजनीति की इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए सन् 1964 में गिराजि किशोर ने अपना प्रथम उपन्यास लोग' लिसकर उपन्यास जगत में पदार्पण किया । गिरिराज किशोर आधुनिक युग के श्रेष्ठ कहानीकार , नाटककार और उपन्यासकार हैं । उन्होन अब एक बार ह उपन्यास लिये है जो ज्यादातर राजनीति से ही.पभावित एवं प्रेरित हैं । हम इन उपन्यामों को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं , गिरिराज विशोर के शुद्ध राजनीतिक एवं अंशतरू राजनीतिक उपन्यास । शुछ राजनीतिक उपन्यासों में लोग जुगलबन्दी "इन्द्र सुने ', तीसरी सत्ता :, 'यथा प्रस्तावित :, और परिशिष्ट आते हैं और मातरानीतिक उपन्यासों , 'दो , 'देवदार, :-'चिड़ियाघर', असलाह , यात्रायें , और अन्तर्वस' आदि को लिया जा सस्ता है ।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में सत्ता और राजनीति , शासन तन्त्र एवं व्यक्ति , नवीन सामाजिक राजनीतिक मूल्यव्यवस्था , राजनीति शासन गांधीवादी सिदान्त आदि विभिन्न राजीतिक प्रतिमानों को गिरिराज किशोर के जोपन्यासिक साहित्य में स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा ।

ब्रिटिश शासन व्यवस्था और भारतीय समाज

भारत में ब्रिटिश शासन का इतिहास बात आई सोषण की वर एवं हृदयद्रावक कम्ण कथा है । दो शताब्दियों के अपने शासन काल में चीजों ने भारत को एक ऐसी गरीबी और तबाही दी है जिसकी तुलना संसार के किसी देश में नहीं की जा सकती ।

सन 1857 के विद्रोह के बाद भारत का शासन ब्रिटिश सरकार के हाथों में बा गया था । ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत भारत के निवासियों के साथ जिस प्रकार अत्याचारपूर्ण व्यवहार हुआ था , उसमें देश एक निरामा का जीवन बिता रहा था , ब्रिटिश सरकार ने देश को इस काबिल बनान की कोशिश की कि वह कभी सिर उठाने की योग्य न हो सके । इतना ही नहीं उन्हीं दिनों एक ऐसा कानून भी पास हुआ , जिससे हिन्दुस्तानियों के अस्त्र शस्त्र छीन लिये गये और वह सदा के लिये निकम्मे तथा बेकार बना दिये गये ।

भारत की इस राजनीतिक परिस्थिति का प्रभाव यहा के साहित्य पर भी प्रचुर मात्रा में पड़ा जो व्यक्त अव्यक्त रूप से यहाश की साहित्यिक विधाओं में यत्र तत्र पस्फुटित हुजा । तत्कालीन उपन्यासों के साथ ही भारत स्वतन्त्रता के परचात भी न रानीतिक घटनाओं को उपन्यासकारों ने अपने विषय का माध्यम बना लिया जिनमें से गिरिराज किशोर के उपन्यासों का पथक स्थान है । उन्होने इस दिशा में अपना एक पथक स्थान बना लिया है । 125 सन 1937 में जन्म लेने के कारण उन्होंने भारत विकास की विभीषिका का परिज्ञान प्राप्त किया था जो अंततरू उनके उपन्यासों में म्कि रूप से अभिव्यक्त होता रहा। श्लोग उपन्यास प्राइ स्वाधीनता युग का होने कारण इसमें ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीयों की मानसिकता को बम्बी से उद्घाटित किया है ।

गिरिराज किशोर का जुगलबन्दी 19778 उपन्यास द्वितीय विश्व पुट एवं भारत स्वतन्त्र होने तक के वातावरण को प्रस्तुत करता है । गिरिराज किशोर परिसितियों के परिवेश में तदयुगीन गाधी जी द्वारा परिचालित एवं संवालित राष्ट्रीय संघर्ष के फलस्वरूप उत्पन्न हुई घटनाओं से अछूते नहीं रह सके है । अतरू उन्होंने गांधीवादी सिद्धान्तों का उपन्यास के कथ्य में सलिषणात्मक अंकन विशिष्टता से किया है । लोक गाधी जी के उच्च स्तर पर प्रभावित हुबन है उन्हें

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

जलौकिक उच्च जात्मा के रूप में देने की दृष्टि का परिचय दिया । । लोग उन्हें भगवान राम का अवतार मानने लगते हैं । इनकी उपटी गांधी जी के आयोजन के विफल करने के लिए लगाई गई । वे गांधी जी से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने त्यागपत्र दे दिया और देश का काम करने लगे गिरिराज किशोर ने अपने एक पा के द्वारा इसका उदाहरण दिया हे ष्सुना है महात्मा गांधी भी भगवान राम के औतार है। गीता बाव बाकर हुकम जारी करते है । नहीं तो एक आदमी के बस की बात थी इतनी बड़ी सलक्त को जीजों के खिलाफ का कर लेता ।

गिरिराज किशोर के लघु उपन्यास

गिरिराज किशोर ने अपने लघु उपन्यास – लोग में बाबा राय साहब यशवन्तराय है के माध्यम से गांधीवाद है सिरान्तों को बहुत ही समता से उद्घाटित किया है । ब्रिटिश सरकार के किसी प्रतिनिधि द्वारा उन्हें ४पेदपुल प्रैडश कह दिया जाना बहुत गोरव की बात समझी जाती थी, किन्तु जन जागरण को क अपनी विकरालता को दिखाने लगा था , जिससे आज भी चिन्तित हो इन्डेन्डस' पर विार करने लगे है , जमींदारी वर्ग को चुनौती थी । वह आने वाले गाडीयुग से उद्वेलित होते हुए आजादी से पहले ही भविष्य के बारे , इस प्रकार मोदले लो ये कि श जमादारों को क्या स्थिति होगी .... हम लोग भी हाथों में ले लटकायै सड़को पर धुमा करेगे । नौकरों के सौ सौ साल पुराने घरों से रहना होगा , आए लोगा इन्तजाम करें । उन्हें अपना अस्तित्व सोया योया लगने लगा था वो चिन्तनशील थे कि अपने को भविष्य में ष्एडजस्ट ष कर पाये । डा. वार्ष्णेय जी उपन्यास की श्समरी – इन शब्दों में चित्रित करते हुए कहते हैं कि श्जगजी राज्यान्तर्गत उत्पन्न हुई व्यवस्था , ज–जागरण और स्वतन्त्रता प्राप्ति के सम्प नई सामाजिक शझिया किस प्रकार उभर रही थी और किस प्रकार वे अभिजातवर्ग को सामाजिक आर्थिक स्तरों पर डुल रही थी और उस धर्म से सम्बद्ध लोग अपने को उपेक्षित सम्झ कर नये परिवर्तन को उछालता , मूल्यहीनता संस्कार , हीनता आदि विघटनकारी प्रवृत्तियों का जन्मदाता मानकर अपने को अपदस्थ और या क्तत्वहीन समझ रहे थे । नये संदर्मों में अपने को डाल पाने में असमर्थ समझ रहे थे , इन सब बातों का उल्लेप लोग में हुआ है ।

झाव की राजनीति और जन प्रतिक्रिया

प्रजातन्त्रात्मक प्रणाली में नाव ही ऐसा साधन है जिसके माध्यम से जनता के द्वारा जनता की सरकार ली जाती है । अपने हितेषी ,विश्वासी प्रतिनिधियों को राष्ट्र के संचालन का उत्तरदायित्व दिया जाता है । श्लकन यह नाव भी आज एक समस्या बन गया है । प्रत्याशियों पर परस्पर कीचड़ उछालना , वोट लेते समय जनता के समक्ष झूठे वायेदे करना , जीतने के बाद अपनी प्रतिज्ञाओं को भूलकर स्वार्थसाधना में लीन हो जाना कई कलुषित बाते अस

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

प्रणाली में प्रयुक्त होने लगी है। नावों के समय पेसा पानी की तरह बहाना , वोट खरीदना , शराब का दरिया तहाना , डरा का कर वोट खरीदने तथा अनावी साधनों में आज अनुचित गो का.पयोग होने लगा है । माव प्रणाली की इन त्रुटियों को गिरिराज विशोर ने अपने उपन्यासों मे उदघाटित किया है ।

श्लोगउपन्यास में की गिरिराज किशोर ने नावों के दौरान व्यापत हिंसा का वर्णन म्यिा है कि किस प्रकार अपनी पदवी को पाने के लिए जमीदार वर्ग लोगों को अपनी तरफ मिलाने लिए पैसे और शराडो से खरीदता है। इसी को इस उपन्यास में दर्शाया गया है । रापसाब पिछले 20 वर्षों से म्युनिसपेलिटी के चेयरमैन को जाते रहे हैं परन्तु इस वर्ष उनके विरुद्ध सानबहादुर इस्रामुल हक सड़े होते हैं । कि मुसलमान है । मानबहादुर अपने को जीताने के लिए श्उमराश चमार को पैसे ते बल पर अपनी तरफ कर लेते हैं और उससे कहलवाया जाता है कि क रायसाब के चरित्र पर कल्क लगाकर उन्हें सबसे साम्ने लजीज को जिससे वह इलेक्शन में खड़े न हो सके ।

नतात्रिक प्रतिक्रिया और भारत की जातिवादी क्षेत्रवादी मानसिकता

स्वतन्त्रता के साथ विभिन्न समस्याओं में से क महत्वपूर्ण समस्या थी राष्ट्रीय विघटन की समस्या । इस महत्वपूर्ण समस्या पर प्रारम्भ में राजकीय नेताओं ने ध्यान नहीं दिया । 196। इ. में अर्थात स्वतन्त्रता के चौदह वर्ष उपरान्त राष्ट्रीय एकता का नारा देश में लगाया गया । सत्तास्द दल ने यह नारा बड़ी बुलन्द आवाज में लगाया था । राष्टीय स्तर पर राष्ट्रीय रक्ता समिति का गठन भी किया गया था और भावनात्मक एकता के लिए शैक्षिक कार्योठमों का सुझाव देने के लिए डा संपूर्णानन्द की अध्यक्षता में क दुसरी समिति भी नियुक्त की गई थी । राष्ट्रीय एकता के प्रयत्न किए जा रहे थे । लेजिन इन प्रयलों के बाबजूद की ऐसे कुछ प्रजन तत्व थे जो राष्ट्रीय जीवन को छिन्न भिन्न कर रहे है। इनमें प्रमुख जातिवादी और क्षेत्रवादी के विघटनकारी तत्व।

जातीयता की प्रवृत्ति की जड़े स्वतन्त्रता के परचात और भी मजबूत हुई है । हमारे म्याकलापों का आधार जाति मानी जाती है न कि गुणावगुण । चपरासी की नियुक्ति से नाव में उम्मीदवारों की मुचि बनाने और बागे चलकर मंत्रीमंडल का निमाण करने तक जातिगत प्रवृत्ति को ही आधार माना जाता है । सभा मम्गेनो पा संगमंच पर दिए भाने वाले वक्तव्यों से जातीयता भले ही नष्ट हो गई हो , लेकिन जाति के आधार पर ऊंच नीच का भेदभाव छोटा बड़ा आदि की भावनाओं में हम सबक त्रस्त हैं ।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

गिरिराज किशोर का श्परिशिष्ट उपन्यास जातिवाद पर आधारित एक सशका उपन्याम है । इसमें प्राई आई. टी जसे उच्च शिक्षण स्थान को भी जातिवाद से विशेष रूप से प्रभावित दिखाया गया है कि किस प्रकार इस विशेष वर्ग के टिद्यार्थियों को अपनी निम्न जाति का एहसास करवाया जाता है और उनको वात्महत्या करने तक को वेरित किया जाता है ।

इस उपन्यास में एक पिता की मानसिकता को दर्शाया गया है कि मि प्रसार वह अपने हकलौते बेटे अनुकूल को उच्च शिक्षा दिलवाने के म ए रत्साहित है । वह जातिवाद की मानसिकता से इतना व्याकुल है कि वह अपने बेटे को कहता है कि वह अपने ष्तुम्हारा दासला हो जाये , तो मेरी जिन्दगी सहारथ लग जाये । अभी तक नो भने लोहा लंगड़ ही डोया .. सबकी नजरों में पूर्ण बनकर ही जिन्दगी गुजारी । जिस दिन तुम इंजीनियर बनकर निकलोगे उस दिन मेरी यह सारी मूर्यता अकल में बदल जायेगी । यह ताश जात पात की भिमान जान को लगी है पर की जुन गुरु जायेगी ।

उद्देश्य

1. राजनीति – विषयक उपन्यासों के संदर्भ में गिरिराज किशोर के उपन्यासों के अध्ययन लिए ।
2. ब्रिटिश शासन व्यवस्था और भारतीय समाज में गिरिराज किशोर के उपन्यासों के अध्ययन लिए ।

उपसंहार

राजनीतिक उपन्यास परम्परा में गिरिराज किशोर के उपन्यासों का मूल्यांकनश इस शोध का विषय है जिसमें उसके उपन्यास साहित्य को राजनीतिक पृष्ठभूमि पर आका गया है । विषय के परिसीमन तथा अध्ययन के महत्व को दृष्टि में रखते हुए इसमें आलोच्य विषय के संपूर्ण तथ्यों को समुपस्थित करने का प्रयास क्या गया है । मानव पशु की उपेक्षा अत्यंत व्यवस्थित रूप से जीवन व्यतीत करके राज्य के अन्तर्गत न्याय एवं कानून के अधीन रहना कि पसन्द करता है । यही राज्य मानव को अपना जीवन सुव्यवस्थित एवं सुनियोजित ढंग से जीवन

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

यापन करने के लिए उदासर करता है । राज्य की यही श्रामीति एक और नागरिक की आर्थिक नीति को निश्चित करती है तथा दूसरी और उसकी समस्याओं को सुलझाने का एक महत्वपूर्ण साधन बन जाती है । राज्य की यही समकालीन अथवा भूतपूर्व घटनाएं साहित्य में जब स्थान लेती है तभी उसका सीधा या परोक्ष संबंध राजनीति के साथ जुड़ जाता है । इस रूप में जब साहित्यकार भूत अथवा वर्तमान के आंदोलनों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता , तभी उपन्यासकार उन पटित मतभेदो बारणाओं , कातियों और म आदोनों को अपने कथ्य का विषय बनाता है । उपन्यासकार अपने बापको जन आंदोलनों के साथ जोड़कर समाज का प्रतिनिधित्व करता है और उपन्यासकार गिरिराज किशोर ने अपने उपन्यास साहित्य में इन्हीं रानीतिक जांदोलनों को समाविष्ट किया है । उपन्यासकार गिरिराज किशोर ने समाज से संयुक्त सि रानीतिक घटनाओं को अपने कथ्य का विषय बनाया है , उन्हीं का लेखा जोखा इस शोध प्रबंध में प्रस्तुत किया गया है । राजनीति में साम , दाम , दण्ड एवं भेद की जो प्रथाएं प्रचलित मानी गई हैं , उनका चित्रण करके भी उपन्यासकार ने केवल मानव को ही अपना लय बनाया है और उसे सद्भावनाओं की और ही प्रेरित किया है । गिरिराज किशोर के ये उपन्यास मूलतः रामीतिक नहीं है अपितु उन्होंने केवल अपने उपन्यासों में राजनीतिक दोनों की ओर केवल मात्र संकित किया है ।स्वातन्त्रयोत्तर काल में राजीतिक उपन्यासों का उत्कई बदा । कुछ उपन्यासकारों ने अपनी इस परम्परा को जारी रखा और कुछ गन्य उपन्यासकार भी इसमें पदापर्ण कर गए । पदापर्ण करने वालों में गिरिराज विशोर का नाम बागग्य है जिसने स्व उपन्यासों में राजनीतिक उपन्यास सामाजिक चेतना ,स्वार्थ , लिप्सा , व्यक्तिगत दक्ष तथा महत्वकांक्षा दि का किरण किया । इन उपन्यामों पर लेक के मुक्त भोगी जीवन तथा वक्तित्व का भी प्रचुर प्रभाव परिलक्षित होता है । गिरिराज किशोर के इन उपन्यासों में जहां रानीतिक व्यवस्था के आदर्शों के परित्याग का एक प्रकार पूर्ण चित्र आनत किया गया है वही उससे इस बात का संकेत भी मिलता है कि एक दिन ऐसा भी जाएगा जब यह सम्पूर्ण तम दूर होगा तथा स्वस्थ राजनीतिक जादर्शों का सूर्य उदित होगा। भविष्य की यही स्वर्णिम चेतावनी इन उपन्यासों में गूंज रही है ।

संदर्भ सूची

1. अमृतराय बोज, इस प्रकाशन . माणवाद, 1953 प्रेमचन्द विविध प्रसंग भाग । . संबन और स्मान्तरकारमतराय, दमाहाबाद, म प्रकाशन 1954

2. वाचार्य जाबेडकर बाधुनिक भारत, मवाद, हरिभाऊ उपाध्याय, स्मृति प्रकाशन माहाबाद,1976 बीनहोत्री,बी नारायण उपन्यास ताव एवं हम विद्यान , आचार्य सुकम साधना सदन, कानपुर, 1962

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

3. अवस्थी जोम्मकान आलोमा की पिसान, पुस्तक संस्थान,कानपुर, प्र. सं. 1962

4. उपाध्याय, देवराज, साहित्य का मनोविज्ञानिक अध्ययन, एम.चन्द एण्ड कम्पनी , दिल्ली, 1960

5. जोमा दसरथ नाट्य निबन्ध,दिल्ली, मेनस पमिसिंग हाउस, प्र. सं. 1972

6. विशोर, गिरिराज मोग, राजकमल प्रकाशन, नेती सुभाषचन्द्र मार्ग हरियागंज , नई दिल्ली 1966

7. किशोर, गिरिराज चिड़ियाघर, सरस्वती बिहार माहादरा.नई दिली . 1968

8. विशोर , गिरिराज यात्रा , राजकमल प्रकाशन ,नेजीसमावन्द्र मार्ग, दरियागंज , नई दिल्ली , 1971

9. कर, गिरिराज जुगलधुन्दी, राजगन प्रकारात, नेता जी सुभाषचन्द्र मार्ग , दरियागंज, नई दिल्ली , 1973

10. राजमल प्रकाशन, नेत्रा जी सुभाषचन्द्र मार्ग दरियागंज नई दिल्ली , 1974

*****